B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-2
HISTORY (SUB./GEN.)
UNIT-5(B)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KR.MISHRA
DATE-16/09/2020

TOPIC- सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930 ई.)

(CIVIL DISOBEDIENCE MOVEMENT (1930 AD)

Part-3

Scanned with CamScanner

सविनय अवज्ञा आंदोलन, भाग-3

आंदोलन को लोकप्रिय बनाने के साधन

i.) जनता को हरकत में लाने के लिए गाँवों और कस्बों में प्रभात फेरियाँ बनाई गई जिसमें औरतें एवं बच्चे प्रातः काल झुण्ड बनाकर राष्ट्रीय गाना गाते हुए गली-गली घूमते थे। हाथ से लिखे हुए पत्र-पत्रिकाएँ प्रेस अधिनियम को तोड़ने के लिए सारे देश में प्रचारित किए गए।

ii.) गाँवों तक राष्ट्रीय संदेश पहुँचाने के लिए जादुई लालटेनें काम में लाई जाती थी। बच्चों की वानर सेना गठित की गई और बच्चियों की मंजरी सेना बनाई गई।

iii.) पहले की तरह ही कार्यकर्ताओं और नेताओं के लगातार दौरे, छोटी बड़ी जनसभाएँ आंदोलन का केन्द्रीय आधार बनी रही।

सामाजिक आधार

A.) औद्योगिक घरानों का विशाल समर्थन सविनय अवज्ञा आंदोलन को मिला। यह समर्थन असहयोग आंदोलन के दौरान दिखाई नहीं पड़ा।

B.) बड़े पैमाने पर स्त्रियों की भागीदारी इस आंदोलन में हुई। स्त्रियों ने धरनों, जुलूसों व बहिष्कार कार्यक्रम में शामिल होकर आंदोलन के सामाजिक आधार को व्यापक बना दिया।

C.) मजदूरों की भागीदारी असहयोग आंदोलन की तुलना में नगण्य थी। मुस्लिम अक्सर शत्रुता के भाव से ग्रस्त रहे। इसके बावजूद पश्चिमोत्तर प्रांत में उनकी भागीदारी जबरदस्त थी।

नमक और सविनय अवज्ञा

A.) नमक का मुद्दा जनता के सभी वर्गों को प्रभावित करता था और इसका कोई फूट परस्ती निहितार्थ नहीं था।

B.) यह एक भावनात्मक मुद्दा था। इस मुद्दे से छोटे-बड़े जीव-जीवा सभी जुड़े हुए थे। अतः यह गाँधी के वर्ग समन्वय की अवधारणा को पूरा कर रहा था।

Pankaj
6/09/2020

Scanned with CamScanner